प्रयोजनमूलक हिन्दी

[अभिप्राय और प्रयोग-क्षेत्र]

बी.ए. द्वितीय वर्ष

हिन्दी भाषा

:: प्रस्तुतकर्ता ::

डॉ. जगदीश शरण

सहायक प्रोफ़ेसर हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय भोजपुर, मुरादाबाद

स्वयं निर्मित

Scanned with CamScanner

: प्रयोजनमूलक हिन्दी

प्रयोजनमूलक हिन्दी से ~~अर्थ एवं~~ का अभिप्राय और उसकी ~~उपयोगिता~~ परिव्याप्ति :

"प्रयोजनमूलक हिन्दी" अंग्रेजी शब्द functional Hindi का पर्याय है। प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य ऐसी हिन्दी से है जो विभिन्न प्रयोजनों में प्रयुक्त होकर कार्य सिद्ध करती है। इसप्रकार यह प्रशासन, वाणिज्य, विज्ञान, उद्योग, विधि, संचार, अर्थशास्त्र, राजनीति, अनुसन्धान कार्य, शिक्षण कार्य आदि समस्त क्षेत्रों में प्रयुक्त होकर तथा मौलिक चिन्तन एवं अभिव्यक्ति के स्तर में सुविधा द्वारा अपनी सार्थकता तथा अर्थवत्ता को सिद्ध करती है। जो भाषा जितने अधिक क्षेत्रों और कार्य-व्यापारों में प्रवेश का जितने अधिक प्रयोजनों को सिद्ध करती है, वह उतनी ही अधिक प्रयोजनशील भाषा कहलाती है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी को निम्नलिखित नामों से भी पुकारा जाता है :

(1) कामकाजी हिन्दी
(2) व्यावहारिक हिन्दी
(3) आनन्दमूलक हिन्दी

प्रयोजनमूलक हिन्दी की उपयोगिता : प्रयोजनमूलक हिन्दी को कामकाजी हिन्दी, व्यवहारिक हिन्दी, आनन्दमूलक हिन्दी आदि नामों से पुकारे जाने के पीछे उसकी उपयोगिता और उसके महत्त्व का भाव छिपा हुआ है। जीवन की प्रत्येक जरूरत की पूर्ति के लिए के उपयोग में आने वाली यही प्रयोजनमूलक हिन्दी है। डॉ० विनोदगोदरे ने लिखा है कि भाषा के दो पक्ष या प्रकार होते हैं - एक का सम्बन्ध हमारी सौन्दर्यपरक अनुभूति का आलम्बन होता है। यह आत्मकेन्द्रित और आत्मसुख का उपकरण होता है। दूसरे का सम्बन्ध हमारी सामाजिक आवश्यकता और जीवन की उप

आवश्यकताएं कुछ होती हैं जो व्यावसायिक होकर भी समाज-सापेक्ष होती हैं और जिनका सम्बन्ध स्वतः हमारी जीविका के साथ रहता है और उनके निमित्त जो सेवामाध्यम (सर्विस टूल) के रूप में प्रयुक्त होता है। भाषा व्यवहार का यह प्रकार ही भाषा का प्रयोजनमूलक पक्ष है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियाँ और उनके प्रयोगात्मक क्षेत्र :

डॉ० भोलानाथ तिवारी ने प्रयोजनमूलक हिन्दी के सात प्रयोजनमूलक रूप निर्धारित किए हैं। डॉ० विनोद गोदरे ने इन रूपों में वृद्धि कर निम्नलिखित रूप और प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियाँ इस प्रकार वर्णित की हैं —

(1) बोलचाल की हिन्दी

(2) व्यापारी हिन्दी (इसमें भी मण्डियों की भाषा, सर्राफे के दलालों की भाषा, सट्टा बाजार की भाषा आदि कई उपरूप हैं।)

(3) कार्यालयी हिन्दी (कार्यालय भी कई प्रकार के होते हैं और उनमें भी भाषा के स्तर पर कुछ अन्तर है।)

(4) शास्त्रीय हिन्दी (विभिन्न शास्त्रों में प्रयुक्त भाषाएँ भी शब्द के स्तर पर कुछ अलग हैं। इसमें ज्योतिशास्त्र, काव्यशास्त्र, भाषाशास्त्र, दर्शनशास्त्र, योगशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, विधिशास्त्र आदि की भाषा ए हैं।)

(5) वैज्ञानिक तथा तकनीकी हिन्दी (इंजीनियरिंग, बढ़ईगिरी, लुहारी, प्रेस, फैक्टरी, मिल आदि की तकनीकी भाषा।)

(6) समाजी हिन्दी (इसका प्रयोग सामाजिक कार्यकर्ता करते हैं।)

(7) साहित्यिक हिन्दी (कविता, कथा साहित्य की विभिन्न विधाओं की भाषा।)

(8) प्रशासनिक (प्रशासनिक कार्यों के लिए प्रयुक्त भाषा।)

(9) जनसंचार माध्यम (पत्रकारिता, आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि की भाषा।)

Scanned with CamScanner

प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोगात्मक क्षेत्र : प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रयोगात्मक क्षेत्र निम्नलिखित हैं :

(1) केन्द्र और राज्य शासन के पत्र-व्यवहार
(2) विधानमण्डलों की कार्यवाही
(3) संसदीय विधियाँ
(4) कार्यालय सम्बन्धी पत्राचार
(5) सरकारी संकल्प और अधिसूचनाएँ
(6) सरकारी, गैर सरकारी प्रेस विज्ञप्तियाँ
(7) आयोगों, समितियों की कार्यवाहियाँ
(8) अभिकरण, मसौदे, निविदाएँ
(9) आवेदन-पत्र, लाइसेन्स, परमिट
(10) वैज्ञानिक तथा ~~तकनी~~ तकनीकी शब्दावली
(11) विधि सेवाएँ
(12) बैंकिंग सेवाएँ
(13) डाकतार, रेलवे आदि
(14) प्रशासनिक पत्र-व्यवहार
(15) संचार माध्यम
(16) विज्ञान
(17) उद्योग
(18) राजनीतिक क्षेत्र
(19) अनुसन्धान कार्य
(20) शिक्षणकार्य
(21) व्यावसायिक पत्र-व्यवहार,
(22) विज्ञापन, फिल्म आदि
(23) अनुवाद का क्षेत्र।

Scanned with CamScanner